बुद्धि शुद्ध रखनी,कोई आसुरी चलन नही हो
क्योंकि बाप दैवी धर्म और श्रेष्ठ कर्म सिखलाते
देह-अभिमान पाप कराता,बाप की याद भुलाता
देहधारी की याद दिलाता,ख़राब खयालात
लाता
अपनी इस माया से संभाल करनी
कुदृष्टि नही रखनी,जो फिर सज़ा दिलाती
सबसे प्यार से चलना,आत्म-अभिमानी बनना
अपने को अवतरित आत्मा समझना
विश्व-कल्याण की सेवा का हर संकल्प रचना
चैतन्य लाइट-हॉउस बन सर्वशक्तियों की लाइट
देना
राजधानी में नंबर आगे लाना
तो स्नेह और सहयोग के साथ शक्ति रूप बनना

ॐ शांति!!!
मेरा बाबा!!!